श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन, हरण भवभय दारुणम्।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, पद कंजारुणम्॥ धृ॥

हे मन, कृपालु भगवान श्रीरामचन्द्र का भजन कर
जो जन्म-मरण के दारुण भय को हर लेते हैं।
उनके नेत्र व मुख, हाथ व पैर,
उषःकाल के रंग के, नव-विकसित कमल के समान सुन्दर हैं।

कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरम्।
पट पीत मानहु तडित रुचि-शुचि, नौमि जनक सुतावरम्॥ १॥

जिनकी छवि अगणित कामदेवों [प्रेम के मोहक देवता] की
अमित प्रभा की भाँति द्युतिमान है, नवीन नीले मेघों की भाँति सुन्दर है;
जिनका पीताम्बर मानो देदीप्यमान विद्युत की भाँति दमक रहा है—
ऐसे उन जनकसुता [सीता जी] के पति को मैं प्रणाम करता हूँ।

भजु दीनबन्धु दिनेश, दानव-दैत्य-वंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द दशरथ-नन्दनम्॥ २॥

हे मन, सूर्य की भाँति तेजस्वी, दीनों के रक्षक,
दैत्यों के वंश का नाश करने वाले, रघु के वंशज, दशरथ के पुत्र,
कोशल राज्य के उज्ज्वल चन्द्र, सकल आनन्द के मूल,
भगवान श्रीराम की आराधना कर।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणम्॥ ३॥

उनके सिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल, मस्तक पर सुन्दर तिलक है,
उनके श्रेष्ठ अंग भुजबन्दों व अलंकारों से सुशोभित हैं,
वे आजानुबाहु हैं अर्थात् उनकी लम्बी भुजाएँ उनके घुटनों तक पहुँचती हैं
जो कि उनकी दिव्यता का प्रतीक है।
वे धनुष-बाण धारण किए हुए हैं और उन्होंने युद्ध में खर व दूषण इन दैत्यों को जीत लिया है।

इति वदति तुलसीदास, शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनम्॥ ४॥

तुलसीदास जी कहते हैं : हे प्रभु राम! आप, शिव जी, शेषनाग जी और
मुनियों के मन को प्रसन्न करने वाले हैं,
काम आदि अन्तर-रिपुओं का नाश करने वाले हैं।
आप कृपया सदैव मेरे हृदय-कमल में निवास कीजिए।

डिज़ाइन व अंग्रेज़ी भाषान्तर : © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।